SPECIAL MENTIONS

Need to allot two special compart. ments for vegetable and milk suppliers in Mokmeh-Patna Shuttle train

श्रीमती कमला सिन्हा (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपकी इजाजत से रेल मंत्री महोदय का ध्यान एक बहुत ही आवश्यक विषय पर आकर्षित करना चाहती हूं। . . . (व्यवधान) . . .

THE VICE-CHAIRMAN (PROF.. CHANDRESH P. THAKUR): I am sorry. You are an elderly person. You must accept the decorum of the House. The next item has been called. The lady Member is already on her legs. She has started speaking. You are frequently getting up. This is not helping you. Nor is it helping anybody else. It is not serving any pur. pose. So, please cooperate.

श्रीमती कमला सिन्हा : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपकी इजाजत से रेल मंत्री महोदय का एक बहुत ही आवश्यक विषय की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं। मुकामा-पटना के बीच एक शटल-ट्रेन चलती है। इस रास्ते की लंबाई करीब 70 किलोमीटर होगी। इस रास्ते पर प्रतिदिन हजारों लोग मुकामा से पटना काम करने के लिए आते हैं और उसी तरह से सैकड़ों मन दूध और तरकारी भी आती है। मैंने यह स्पेशल मेंशन इसलिए उठाया कि प्रति दिन दूध वालों, सब्जी वालों और डेरी पंसजर्स के बीच आपस में झगड़ा झंझट, मारपीट होती रहती है जगह की परेशानी के कारण उस दिन भी 16 अप्रैल को जो आग लग गई थी, उस दिन भी रेल के डिब्बे के तीन दरवाजे बंद थे दूध के टीनों के कारण और एक दरवाजा खुला था, जिससे आग के कारण सौ के करीब लोग जलकर मर गए।

महोदय, जब मैं वहां थी तो मेरे पास लोग आए और उन्होंने मुझे कहा कि रेल मंत्री महोदय को कहा जाय कि दो स्पेशल रेक उसमें जोड़े जायं ताकि तरकारी और दूध वाले तरकारी और दूध ले जा सकें। उसी संदर्भ में, उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगी कि इस काम को किया जाय और तत्काल पटना-मुकामा शटल में दो स्पेशल रेक जोड़े जायं, जिससे सब्जी वाले और दूध वाले अपनी सब्जी और दूध आसानी से ले जा सके और नित-प्रतिदिन जो हजारों डेली पैसेंजर्स चलते हैं, उनको कठिनाई न हो। धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (प्रो० चन्द्रेश पी० ठाकुर) : बात ठीक है। कुमारी सरोज खापर्डे, प्लीज ब्रीफ।

Rising prices of essential commodities

कुमारी सरोज खापर्डे (महाराष्ट्र) : उपसभाध्यक्ष महोदय, अखबार की खबर की ओर मेरा ध्यान आकर्षित हुआ और उसी वजह से मैंने प्राइस-राइस के ऊपर अनुमति मांगी, जो आपने प्रदान की, उसके लिए मैं अत्यन्त आभारी हूं।

महोदय, मैं इस विशेष उल्लेख के द्वारा आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगी इस बात की तरफ, कि सरकार ने गेहूं की खरीद-मूल्य में जो वृद्धि की है, वह तो ठीक है, लेकिन इस बात पर उनके द्वारा विचार नहीं किया गया कि इसके कारण मूल्यों में कितनी वृद्धि हो सकती है और कितने उससे कास्तकारों को फायदे पहुंच सकते हैं? सरकार ने गेहूं का खरीद मूल्य बढ़ाकर 200/- रुपया कर दिया और इस बात को कहकर किया कि किसानों को उससे बड़े पैमाने पर फायदा पहुंच सकेगा। सरकार ने यह दावा किया कि किसानों को इससे लाभ पहुंचेगा। उनका जो दावा है, ऐसा प्रतीत होता है कि एबसोल्यूटली खोखला है। वास्तव में इस मूल्य-वृद्धि से बड़े किसानों को फायदा अवश्य पहुंचेगा, लेकिन जो छोटा किसान है उसे किसी भी प्रकार का लाभ होने

को संभावना हमें नजर नहीं आती। सरकार अगर किसानों के हित में सोचती तो किसानों को फायदा पहुंचाने के बहुत से अन्य तरीके भी थे। किसानों को उनकी खेती में काम आने वाले उपकरणों को सरकार सस्ते दाम पर दे सकती थी, जिससे किसानों को लाभ पहुंचता। किसानों को खाद सस्ते दाम पर दिए जा सकते थे और इतना ही नहीं बल्कि अच्छे बीज सस्ते दाम पर दिए जा सकते थे लेकिन सरकार ने यह रास्ता बिल्कुल भी अपनाया नहीं जिसके कारण आज हम देखते हैं कि रोजमर्रा की जो चीजें हैं, उनके दाम आसमान छूने लगे हैं। सदन के माननीय सदस्य मुझसे सहमत होंगे कि आम आदमी की जो क्रय शक्ति है, यह क्रय शक्ति आज भी किसी तरीके से बढ़ी नहीं है। अपनी जरूरत की चीजें आज भी उन्हें महंगे भाव पर खरीदनी पड़ती है। आपको याद होगा, मैं विरोधी दल की सदस्या होने के नाते आपसे यह नहीं कहना चाहूंगी, बल्कि आप इस बात से सहमत होंगे कि राष्ट्रीय मोर्चे कि सरकार ने वायदा किया था की हम आम जरूरत की चीजों के दाम जल्दी ही कम करेंगे। लेकिन रेल भाड़े और पैट्रोल की दरें बढ़ाकर सब वस्तुओं के दाम, आज आप स्पष्ट देख रहे हैं कि आकाश छूने लगे हैं और आम आदमी महंगाई के बोझ से दबा जा रहा है, मरा जा रहा है। मुझे यह समझ में नहीं आता कि राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार के यह खोखले वायदे आखिर कब तक चलते रहेंगे और कब तक देश की जनता को आप गुमराह करते रहेंगे? आज आज स्थिति यहां तक पहुंच चुकी है कि आम जरूरत की चीजों के दाम इतने बढ़ने लगे हैं कि एक तरफ तो सरकार कीमतों को बढ़ने से रोकने के बारे में यथाशक्ति कोशिश में लगी हुई है, जैसा वह कहते हैं कि हम दाम घटाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन ऐसा कुछ नजर नहीं आ रहा है किसी को भी रेल के भाड़े या पैट्रोल की कीमतों की वृद्धि से मुनाफा खोर लोग चीजों की कीमतें मनमाने ढंग से बढ़ाए जा रहे हैं। उतना ही नहीं, आप और मैं तो काम्फरटेबल स्थिति में हैं, लेकिन गरीबों को जीवन जीना कठिन होने लगा है। जिन लोगों की आमदनी सीमित है, उनका जीवन तो महंगाई के कारण दिन-ब-दिन कठिन होने लगा है।

माननीय, मुझे आज एक बात इस सदन में कहने के लिए कुछ परिस्थितियां मजबूर कर रही हैं, मैं किसी व्यंग्यात्मक ढंग से किसी का नाम नहीं लेना चाहती। मुझे अभी तक एक सवाल का जवाब नहीं मिल पाया है जो मैं यहां पूछना चाहती हूं। महंगाई विरोधी आन्दोलन की हमारी जानी-मानी महिला, आज के वित्त मंत्री की धर्म पत्नी श्रीमती प्रमिला दण्डवते, उनकी आवाज मुझे कहीं सुनाई नहीं दे रहीं। ..(**व्यवधान**)..

श्रीमती कमला सिन्हा : (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदय, प्वाइंट आफ आर्डर।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): No point of order. Let her continue *(Interruptions)* I am sorry, no point of order at this stage.

श्रीमती कमला सिन्हा : महोदय, यह अन्याय है। जो आदमी यहां डिफेंड नहीं कर सकते, उनका नाम लेना अन्याय है।

Her name should not be taken. It is wrong.

कुमारी सरोज खापर्डे : मरा माननीय सदस्या से निवेदन है कि मैंने उनके ऊपर कोई अन्याय की बात नहीं कही। आप सुन लीजिएगा, बाद में प्वाइंट आफ आर्डर के लिए खड़ी हो जाएइगा। (**व्यवधान**)....

SHRI DINESHBHAI TRIVEDI (Gujarat); A lot of people opposed the price rise and all I am sure, the hon. Member will appreciate that it is not possible to take everbody's name. So, why single out one person?

MISS SAROJ KHAPARDE: I am not mentioning her name as such. What I was submitting was something different.

SHRI G. G. SWELL (Meghalaya): '. want to seek a clarification. *(Interruptions)* I am on a point of procedure. *(Interruptions)*

MISS SAROJ KHAPARDE: You please listen.

मेरा कहना था कि देश के किसी भी कोने में जो नारे लगा करते थे, उन नारों में, उन आन्दोलनों में जिन लोगों ने उस समय हिस्सा लिया, आज उन लोगों की कहीं से कोई भी आवाज सुनाई नहीं दे रही है।

महोदय, महिला के नाते मैं और मुझे लगता है कि मेरे साथ अन्य हमारी महिलाएं, चाहे वे किसी भी पक्ष की हों, किसी भी दल की हों, इस बात से जरूर सहमत हो सकती है कि उन तक भी महंगाई की आंच पहुंचने लगी है। आप खाने के तेलों के दाम देख लीजिए। जैसे मूंगफली का तेल पहले 20–25 रुपए प्रति लीटर था और आज उसका दाम 35–40 रुपए प्रति लीटर हो गया है।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR) : Please conclude.

कुमारी सरोज खापर्डे : : मैं दो मिनट लूंगी सर। पहले डालडा का तेल 350 रुपए में एक टिन मिलता था, आज वही डालडा का टिन 500 रुपए में मिलने लगा है। आप कुकिंग गैस के दाम देख लीजिए, उसके भी दाम बढ़ गए हैं। आप गांवों में चले जाइए। गांवों में महिलाएं हमसे कहती हैं कि एक जमाना था कि 30 रुपए प्रति मन जलने वाली लकड़ी मिलती थी और आज उसका दाम 50 रुपए मन हो गया है। चीनी के दाम 8 रुपए किलो से 10 रुपए किलो हो गए हैं और गांवों में तो यहां तक नौबत आ जाती है कि पैसे देने के बावजूद चीनी नहीं मिलती है। नमक जो कल तक एक रुपए किलो था, आज दो रुपए किलो हो गया है। दालों के भाव आज इतने बढ़ गए हैं कि मैं किन-किन के बारे में आपको गिनाऊं।

मिट्टी का तेल, जो आम गरीब जनता के काम में आता है, गांवों में रहने वाले लोगों के काम में आता है, एक जमाने में उसका भाव 3 रुपए लीटर था और आज उसका भाव 5 रुपए लीटर हो गया है। इस लोकसभा चुनाव के पहले सीमेंट का दाम 62 रुपए प्रति बोरी था जो आज 105 रुपए प्रति बोरी हो गया है। महोदय, मैं इस अवसर पर सिर्फ इतना ही कहना चाहूंगी कि राष्ट्रीय मोर्चे के जो चुनावी वायदे थे, वे आज कहां चले गए हैं? क्या आज बढ़ती हुई कीमतों के बारे में जनता की आवाज उनके कानों में नहीं पड़ रही है? मेरी समझ में नहीं आता कि आखिर क्या हो रहा है? क्यों नहीं लोगों की आवाज इनके कानों तक पहुंच रही है? क्या इन लोगों तक आज बढ़ती हुई महंगाई की आंच नहीं पहुंच रही है?

महोदय, इस विशेष उल्लेख के माध्यम से मैं सरकार से यह अनुरोध करना चाहूंगी कि कम से कम रोजमर्रा की चीजों की कीमतों को कम करने के लिए सरकार कोई ऐसा कदम उठाए ताकि लोगों का जो सब्र का बांध है वह कहीं टूट न जाए। महोदय, मेरा सरकार से दूसरा विशेष अनुरोध यह है कि एक निश्चित एक्शन प्लान सरकार बनाए और उसको सदन के सामने रखे और राष्ट्रीय मोर्चे ने जो अपने घोषणापत्र में जमाखोरों और मुनाफाखोरों के विरुद्ध छापा मारने वाली बात कही थी, उसको अमल में लाएं।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): We are going to have a fuller discussion on price rise.

MISS SAROJ KHAPARDE: I will take just one minute.

महोदय, मैं सरकार की मजबूरियों को समझती हूं कि छापे मारना उनके लिए इतना आसान काम नहीं है। जिस दिन छापे मारने का काम यह सरकार शुरू कर देगी, उस दिन जो सपोर्ट आपको मिल रहा है उन लोगों का, वह सपोर्ट अपने आप खत्म हो जाएगा और उस सपोर्ट के चले जाने के बाद

कहीं ऐसी नौबत न आ जाए कि आपकी सरकार गिरे। लेकिन मैं आपकी सरकार की एक वेल-विशर हूं और मेरी पार्टी भी आपकी सरकार की वैल-विशर है। हम चाहते हैं कि पूरे पांच साल तक आपकी सरकार इस देश में राज करे। इन शब्दों के साथ आपने मुझे जो अपना स्पैशल मेंशन रखने का मौका दिया, उसके लिए मैं आपका आभार प्रकट करती हूं। धन्यवाद।

श्रीमती भार्गेट अल्वा : (कर्णाटक) : हम सब आपके साथ हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): Shri Syed Sibtey Razi. He is not here. Shri Gurudas Gupta.

Menacing increase in Smuggling of Gold

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (West Bengal): Mr. Vice-Chairman, Sir, I rise to draw the attention of the Government to the menacing problem of smuggling involving the country as a whole.

Recently, a study has been made at an thoritative level regarding the problem and volume of smuggling. It has been revealed . that smuggling is menacingly on the rise and more so, between the years 1984 and 1988. The indication of the tendencies in 1989 is also one of the rampant increase in smuggling.

The extent of smuggling is generally reduced from the quantum of seizures and also from other corroborative evidence such as, the value, of the dollar and the pound in , the *hawala* market, the volume of inward remittances and the open display of smuggled goods. Another element in the process of determination of the volume of smuggling, particularly, that of gold, is the calculation of the average profitability of the smuggled gold per ten grammes in the *hawala* market. Whereas, the value of seized goods was Rs. 27.82 crores in 1975, in 1988 it has gone up to Rs. 443.32 crores. The profit of smuggling of gold in 1975 per 10 grams was only Rs, 41.61, in 1988 it has been found to be around Rs. 454 per 10 gram. The increase as such is much more then the price rise in the corresponding period. Therefore, the bulk of smuggled goods, particularly gold, is coming in vessels and launches from Dubai to western coast. The main direct take-off points are Singapore Bangkok, Hongkok and Kualalumpur. From Bangkok gold is taken to Nepal and from Nepal it is smuggled to India. Thai Airlines and Nepalese Airlines are made use of by gold smugglers on a large scale. The land route via China Lhasa and Nepal is found to be con-vrndetit gold-smuggling.

Indo-Bangladesh (border of late has also become an important landmark in the routes of smuggling, as also Saurashtra coast and Lakshadeep coast are the latest addition to the conventional gold-smuggling routes. It is not because of ornamentalising of Indian women that there is rise in the demand for gold in the country, gold is the golden form of investment of black money. With the rise in the accum-mulation of black money, demand for gold being on the rise, black money is financing the black trade. on the other hand, the fruit of the black trade is being invested in gold smuggling and smuggling of other goods.

The statement of the Finance Minister made recently points out that the volume of Black money circulation in the country is around Rs. 40,000 crores. This, according to me, is a thoroughly and totally under-statement. There-fore, in this background(I demand that the Government sets up a different anti-gold smuggling agency, India must take up the matter of smuggling of gold with Nepal and other countries in this region. With the change of political set-up it will be possible to adopt a more coordinated move. The tentacles of intelligence agencies must extend to the take-off points and supply base. What is needed is a political will. It also constitutes a part